प्राथमिक विद्यालय नगरीपार

ब्लॉक- मोहम्मदाबाद गोहना

जनपद - मऊ

राज्य - उत्तर प्रदेश

प्रधानाध्यापक -स्वतंत्र कुमार श्रीवास्तव

परिचय

मैं स्वतंत्र कुमार श्रीवास्तव सहायक अध्यापक के पद पर प्रथम नियुक्ति के उपरांत सन 2006 में प्राथमिक विद्यालय नगरीपार पर इंचार्ज प्रधानाध्यापक की पद का कार्यभार ग्रहण किया

विद्यालय की भौगोलिक स्थिति -

विद्यालय जिला मुख्यालय से 28 किलोमीटर दूर ब्लॉक के सुदूर ग्रामीण क्षेत्र क्षेत्र में स्थित है। यहां की आबादी अनुसूचित जाति एवं पिछड़ी जाति मिश्रित है । यहां के लोगों का मुख्य पेशा कृषि कार्य एवं मजदूरी है। पूरे गांव की आबादी लगभग 5000 तथा उस मजरे की आबादी जहां विद्यालय स्थित है।मात्र 500 हैयहां की ज्यादातर आबादी आर्थिक तंगी से जूझती रहती है ।विद्यालय गांव के लिंक मार्ग से 800 मीटर दूरी पर स्थित है । 30 वर्ष से अधिक उम्र के लोगों में शिक्षा का पूर्णतया अभाव है। गांव के बहुत से लोग महानगरों में जाकर मजदूरी का कार्य करके अपना जीवन यापन करते हैं। ब्लॉक मुख्यालय से विद्यालय तक जाने का प्राइवेट साधन नाममात्र है।

समस्याएं और उन समस्याओं से निपटना मेरे लिए एक चुनौती -

1.मात्र दो कमरे एक शिक्षामित्र(पैराटीचर)।

2.मात्र 52 नामांकन के सापेक्ष 20 से 25 बच्चों की समान्य उपस्थिति।

3.पढ़ने- पढ़ाने का माहौल ना होना ।

4.विद्यालय में नामांकित होना ही बच्चों एवं उनके अभिभावकों द्वारा शिक्षा प्राप्त कर लेना है।

5.शिक्षा प्रक्रिया से गुजर कर कुछ अच्छा करने का सपना ना होना।

6.जागरूक अभिभावकों का बच्चों का नामांकन कान्वेन्ट विद्यालय में होने और प्राथमिक विद्यालयों के प्रति नकारात्मक छवि।

7.विद्यालय में आवश्यक संसाधनों का पूर्णत: अभाव।

सुधार की प्रक्रिया में नेतृत्वकर्ता के रूप में किया गया प्रयास

1.अपनी शिक्षा ग्रहण करने के दौरान प्राथमिक विद्यालयों की अच्छी शिक्षा को याद करते हुए अपने पद का महत्व समझते हुए स्व प्रेरित होकर सर्वश्रेष्ठ राष्ट्र निर्माण हेतु भावी नागरिकता के सृजन में शिक्षक की भूमिका एवं महत्व समझते हुए बच्चों के सर्वांगीण विकास करने का संकल्प लिया

2.सुधारवादी प्रक्रियाओं द्वारा विद्यालय के प्रति अभिभावकों तथा आम जनमानस की मनोवृति बदलना

3.सांस्कृतिक कार्यक्रमों पेंटिंग पत्रिकाओं खेलकूद तथा बाल संसद निर्माण एवं अन्य शैक्षिक सगामी गतिविधियों के माध्यम से भयमुक्त वातावरण का सृजन किया गया

4.बच्चों को अपनी समस्याओं तथा विचारों को साझा करने का अवसर प्रदान किया गया

6.रटंत प्रणाली को खत्म किया गया

7.बच्चों के अधिगम स्तर के अनुसार शिक्षण कार्य प्रारंभ किया गया

8.यूनिफॉर्म के पहनावे में भी में भी अनुशासन लाया गया

9.बच्चों में अच्छे संस्कार तथा स्व नुशासन का विकास किया गया

10.बच्चों की मांग पर स्पोर्ट्स डे के दिन कलर फुल टीशर्ट एवं लोवर व्यवस्था की गई

11.स्वयं के प्रयास से विद्यालय की कंपस को शानदार पेंटिंग तथा गार्डनिंग द्वारा आकर्षक और सुंदर बनाया गया

12.अभिभावकों की जागरूकता से लोकल बॉडी पर विद्यालय में अन्य संसाधन उपलब्ध कराने का दबाव बना

13.विद्यालय में सहयोगी शिक्षकों के साथ मिलकर एक टीम भावना से कार्य

14.बच्चों तथा उनके अभिभावकों को सम्मानित करने की परम्परा विकसित की गई

15.अभिभावकों की बैठक का आयोजन शुरू किया गया

16.बच्चों की उपलब्धियों को उनके समक्ष प्रस्तुत कर अन्य अभिभावकों को जागरूक किया गया

.सन 2014 में सामुदायिक सहयोग से विद्यालय में स्मार्ट क्लास की स्थापना हुई। यह विद्यालय की छवि का ही नतीजा था कि गांव ही नहीं आसपास के क्षेत्रों से भी अप्रत्याशित सहयोग प्राप्त हुआ।

कक्षा के स्तर के अनुसार कक्षा की दीवारों पर टी.एल.एम का चित्रण कर बच्चों को शिक्षण सामग्रियों के प्रति उत्सुक किया गया

विद्यालय विकास के लिए के कार्य एवं प्रयासों के दौरान नेतृत्व कर्ता के रूप में मेरे अनुभव

1.शुरुआत करने से बदलाव संभव है यह विश्वास मजबूत हुआ

2.धैर्य पूर्वक सतत प्रयास सफलता निश्चित है

3.लोकतांत्रिक मॉडल में कोई समस्या नहीं है पहलकारी गतिविधियों से इसे संपूर्णता में सक्रिय किया जा सकता है

4.अच्छी नियत हो तो बहुत सारा सहयोग हासिल हो जाता है ,यह धारणा पुष्ट हुई

5.कहने की बजाय करने का सहयोग ज्यादा प्रभाव कारी होता है

6.अपने सहयोगियों को स्वयं की छवि से प्रभावित कर उनका सम्मान करते हुए उनका सहयोग प्राप्त किया जा सकता है

7.बदलाव के लिए आईएएस पीसीएस ही बनना जरूरी नहीं है जिस स्तर पर दायित्व मिला है वही बदलाव की शुरुआत की जा सकती है।

8.शिक्षा का सूचक्र प्रभावकारी सिद्ध हुआ और बच्चों के भविष्य । बनाने की दिशा में प्रयास सफल हुआ।

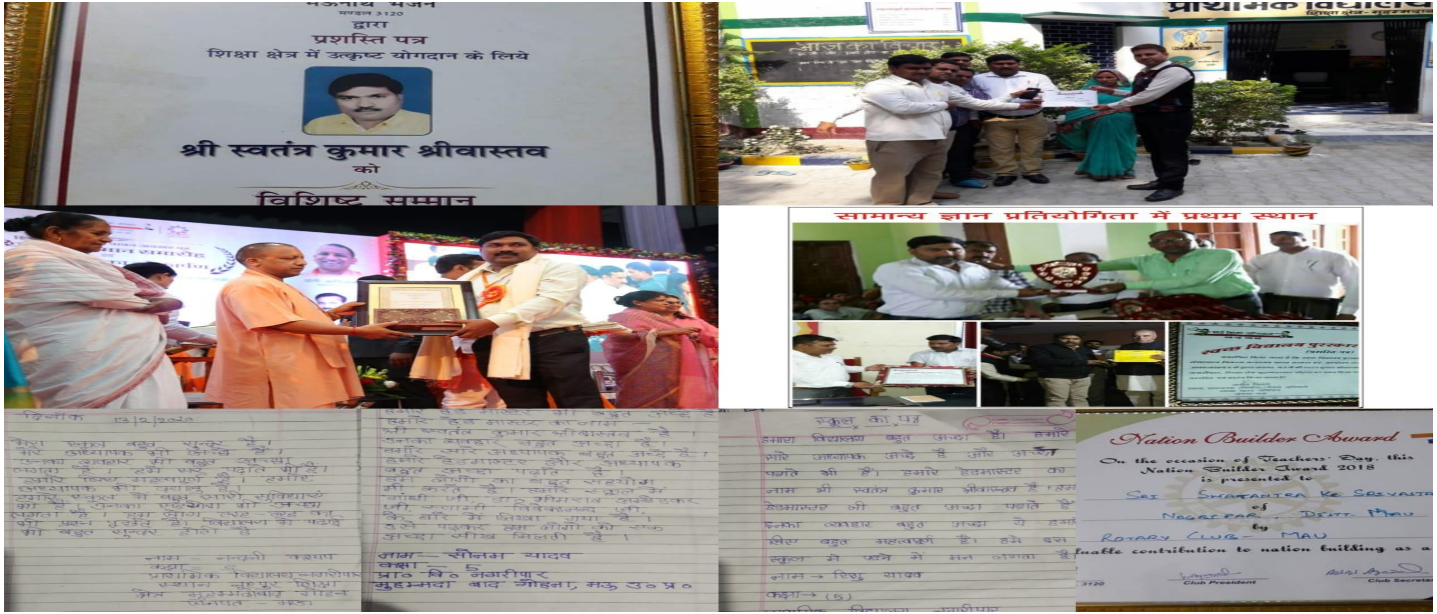

धन्यवाद।